सबसे ज़्यादा खुश रहने वाले आदमी की क़मीज़

सिन्धू पोर्टर द्वारा पुनर्लिखित

सदियों पहले, दूर भूमध्य-सागर के तट पर बसा एक छोटा-सा कस्बा था जहाँ सत्य का एक जिज्ञासु रहा करता था। उसका नाम था एन्जेलो और उसका जन्म एक मेहनती और प्यार करने वाले परिवार में हुआ था।

और इतनी सुन्दर जगह पर, इतने दयालु लोगों के बीच रहकर उसके पास खुश होने का हर एक कारण था। फिर भी वह खुश नहीं था। सूर्योदय के समय अपने घर के पास गहरे नीले, शान्त समुद्र के तट पर टहलने से भी एन्जेलो का मन हल्का नहीं होता।

बचपन से ही एन्जेलो एक दुःख से घिर गया था जिसे वह अभी तक दूर नहीं कर पाया था।

एक दिन उस कस्बे में एक उत्सव मनाया जा रहा था : बच्चों व परिवारों के लिए एक वार्षिक महोत्सव। उत्सुकता के कारण, एन्जेलो ने भी वहाँ जाने का फ़ैसला किया।

जब एन्जेलो वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि रंग-बिरंगी पोशाकों में कलाबाज़ मैदान में छलाँगे लगा रहे थे और अभिनयकर्ता अपने दर्शकों को खूब ज़ोर-ज़ोर से हँसा रहे थे। आसमान साफ़ था, हवा में ताज़गी थी और अच्छी धूप निकली हुई थी।

एन्जेलो के दोस्त चिल्ला-चिल्लाकर कलाबाज़ों का हौसला बढ़ा रहे थे और ज़ोर-ज़ोर से हँस रहे थे, पर एन्जेलो उनसे दूर खड़ा था।

उस दिन का मस्ती-मज़ा उसकी नज़रों के सामने समाप्त हो गया, जैसा कि अकसर होता था।

महोत्सव स्थल से दूर जाते हुए, एन्जेलो सोच-विचार करने लगा, “काश मैं खुश रहने का तरीक़ा खोज पाता।”

उसी दिन शाम को वह पास की एक बन्दरगाह में टहल रहा था, तभी उसे एक फ़कीर दिखाई दिए जो दूर देश से अभी-अभी वहाँ पहुँचे थे। वे फ़कीर उन खोखली लकड़ियों के ढेर पर चुपचाप बैठे थे जिनका इस्तेमाल वहाँ आने वाली कश्तियों को बन्दरगाह पर ठीक तरीक़े से बाँधने के लिए किया जाता था।

इन अजनबी के पास से गुज़रते हुए, गलती-से एन्जेलो का एक छोटा-सा चमड़े का बटुआ उसके हाथ से नीचे गिर गया। वह बटुआ उन फ़कीर के पैरों पर जा गिरा, और जब एन्जेलो उसे उठाने के लिए झुका तो उसकी नज़रें इन बूढ़े आदमी की नज़रों से टकराईं।

फ़कीर की नज़र उस नौजवान की आत्मा की गहराई तक पहुँच गई।

एन्जेलो को अपनी इच्छा याद आ गई जो उसने सुबह-सुबह की थी और जब उसने फ़कीर की आँखों में देखा तो उसे उस खुशी की झलक मिली जिसकी वह तलाश कर रहा था।

"कौन हैं आप?" एन्जेलो ने पूछा। "मुझे आपकी आँखों में सच्ची खुशी दिखाई दे रही है। क्या आप मेरी मदद कर सकते हैं? मुझे वह खुशी चाहिए जिसे मैं आपकी आँखों में झलकता हुआ देख रहा हूँ।"

फ़कीर चुप थे। फिर उन्होंने एन्जेलो की ओर देखा और कहा, "इस खुशी की चाबी पाने के लिए तुम्हें यहाँ से बहुत दूर जाना होगा। सफ़र लम्बा होगा, फिर भी अगर तुम डटे रहे तो उसका नतीजा बहुत संतोषजनक होगा। पूर्व दिशा में दो चोटी वाले पहाड़ के ऊपर एक साधू रहते हैं। उनसे वह क़मीज़ माँगना जो वे पहनते हैं। और जब तुम उस क़मीज़ को पहनोगे तो तुम भी खुश हो जाओगे।"

इन व्यक्ति के मिलने की उम्मीद में, और उससे भी ज़्यादा उनकी क़मीज़ मिलने की उम्मीद में एन्जेलो को आस बँध गई। यह सोचना थोड़ा अटपटा था कि एक क़मीज़ उसे . . . *खुशी* दे सकती है। फिर भी इस उम्मीद ने उसे उत्साह से भर दिया।

कुछ दिन बाद वह एक पानी के जहाज़ में बैठकर उस क़मीज़ और उसे पहनने वाले व्यक्ति की खोज में निकल पड़ा।

महीनों तक एन्जेलो इस तथाकथित खुश व्यक्ति की खोज में दूर-दूर तक यात्राएँ करता रहा।

तुर्की के तटीय इलाकों में उसे एक ऐसा खुश व्यक्ति मिला भी; यह देखकर उसे प्रोत्साहन मिला। एन्जेलो उस व्यक्ति के पास गया और उसने पूछा, "सुनिये जनाब, आप सचमुच खुश दिख रहे हैं। बस अगर आप मुझे अपनी क़मीज़ पहन लेने दें तो मुझे भी खुशी मिल जाएगी और मेरे तड़पते हुए मन को आख़िरकार राहत मिलेगी।" ऐसा लगा कि उस व्यक्ति को समझ में आ रहा था कि एन्जेलो को क्या चाहिए। उसने दयालुता से अपना सिर हिलाया और कहा, "सच यह है कि इसके लिए तुम्हें थोड़ा और सफ़र करना होगा। मिस्र में एक बहुत ज्ञानी-महात्मा रहते हैं। उनसे खुशी छलकती है और वे सचमुच तुम्हें वह दे देंगे जो तुम माँगोगे।"

परन्तु हज़ारों मील का सफ़र करके मिस्र पहुँचने के बाद, एन्जेलो को ऐसा कोई व्यक्ति नहीं मिला और इससे वह हतोत्साहित हो गया।

काइरो शहर के भीड़-भाड़ वाले बाज़ार में भटकते हुए वह अपनी प्रतिज्ञा को वापस जगा रहा था और खुद को हिम्मत दे रहा था तभी वह खुशबूदार मसालों की एक दुकान की ओर खिंचा चला गया। उनकी खुशबू सूँघने के लिए जब वह मुड़ा तो उसकी नज़र पास बैठे एक बेहद समझदार और खुश व्यक्ति पर पड़ी जो उसे टकटकी लगाए देख रहा था। कितनी खुशकिस्मती!

एन्जेलो ने मौके का फ़ायदा उठाया और वह झट-से उस व्यक्ति के पास पहुँच गया और उनसे प्रार्थना की, "जनाब, आपका यहाँ होना एक रहमत है! ऐसा लगता है कि आप सचमुच बहुत खुश हैं। मेहरबानी करके मुझे अपनी क़मीज़ पहनने दें जिससे खुशी मेरे अन्दर भी अपना डेरा जमा लेगी।"

उस व्यक्ति ने कुछ देर तक सोचा और फिर कहा, "अच्छा, तो अब मैं समझा! पूरब की ओर बढ़ते रहो। तुम जिस चीज़ की तलाश कर रहे हो वह तुम्हें ज़रूर मिल जाएगी। बेफ़िकर रहो, खुशी देने वाली क़मीज़ और उसे पहनने वाला आदमी दोनों तुम्हारी राह देख रहे हैं। यह क़मीज़ पहनकर तुम कभी ख़त्म न होने वाली उस खुशी से भर जाओगे जिसकी तुम्हें तलाश है।"

तो एन्जेलो आगे चल पड़ा। अपनी मंज़िल पर ध्यान जमाए, उसने कभी ज़मीन पर तो कभी पानी के जहाज़ में सफ़र किया, उसने ऊँचे-ऊँचे पर्वतों की चोटियाँ लाँघी, वह शहरों और सुदूर गावों से होकर गुज़रा। वह कितने देशों से गुज़र चुका था उसे अब यह गिनती भी याद नहीं थी। तीस साल तक वह बिना रुके, बिना थके बढ़ता रहा।

सफ़र करते समय, एन्जेलो को उसी कहानी वाली क़मीज़ के सपने आते। वह सोचता कि आख़िरकार उस क़मीज़ को पहनकर कैसा लगेगा, उसकी मुलायम बुनावट उसे वह आराम देगी जिसका इन्तज़ार न जाने वह कबसे कर रहा है। उसे ख़याल आते कि वह क़मीज़ उसकी शख़सियत को एक हल्केपन से भर रही है। समय बीतता गया, और क़मीज़ के ख़याल उसके अन्दर ऐसे घर कर गए कि वह उस क़मीज़ को *करीब-करीब* महसूस कर सकता था!

एन्जेलो को पता भी नहीं चला और धीरे-धीरे करके उसकी तकलीफ़ दूर होने लगी थी। कभी-कभी उसे ऐसा लगता कि कबसे सूखे पड़े उसके दिल के रेगिस्तान में खुशी का सोता फूट रहा है। वह अपने अन्दर उठती उमंग से सराबोर हो जाता और किसी नई दिशा में चल देता, उस व्यक्ति की तलाश में जो उसे कभी कम न होने वाली खुशी दे सके।

एक दिन वह चीड़ और देवदार के घने जंगलों में एक झरने के पास से होकर गुज़र रहा था जब उसे ऊपर सामने की ओर हँसी के ठहाके सुनाई दिए। हँसी हवा में ऐसे गूँज रही थी जैसे पास के नदी-तल पर पानी की लहरें। एन्जेलो उस आवाज़ की ओर खिंचा चला गया।

यह हँसी मीलों तक उसके साथ बनी रही, और उसे आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करती रही। खुशी की तरंगें और स्पष्ट व प्रबल होती गईं।

एन्जेलो को अपने शरीर में एक असीम आह्लाद प्रवाहित होता हुआ महसूस होने लगा। उसे अच्छा लगने लगा, हर क़दम के साथ उसे और हल्का महसूस होने लगा।

वह आह्लाद, वह अट्टहास उसे रास्ता दिखाता गया और आख़िरकार वह एक पहाड़ की तलहटी तक पहुँच गया। जब उसने ऊपर की ओर अपना सिर उठाया तो उसने जो देखा वह सबसे अजीब था। उस पहाड़ की एक नहीं बल्कि आसमान की ऊँचाइयों को छूती दो चोटियाँ थीं।

यही वह स्थान था! दो चोटियों वाला पहाड़! क्या वह अपनी मंज़िल के नज़दीक आ गया था? क्या यहीं उसे वे समझदार व्यक्ति—और उनकी क़मीज़ मिलने वाली थी?

समय बर्बाद किए बिना, वह पहाड़ पर चढ़ने लगा।

एन्जेलो ऊपर चढ़ता गया, पहाड़ के टेढ़े-मेढ़े रास्तों और उतार-चढ़ाव को पार करता हुआ; जैसे-जैसे वह आगे बढ़ता, वैसे-वैसे हँसी की वह गूँज और भी बढ़ती जाती। यह ऐसा था जैसे आवाज़ की तरंगें उस पर पड़ रही हों, उसे अपने में समाहित कर रही हों।

आख़िरकार एन्जेलो पहाड़ की चोटी तक पहुँच गया।

वहाँ उसे एक छोटा-सा आश्रम मिला और उस आश्रम के बाहर था इस आवाज़ का स्रोत।

वे एक साधू थे, जिनकी सत्ता के हरेक कण से उनका निर्बाध्य आह्लाद, उनकी हँसी प्रसरित हो रही थी। उन्होंने अपने कन्धों पर एक फटी-पुरानी रंगीन शॉल ओढ़ी हुई थी।

वे साधू अपनी मस्ती में आगे-पीछे हिल रहे थे, तभी एन्जेलो उनके सामने जाकर घुटनों के बल बैठ गया। उसने इन मस्ताने योगी से पूछा :

“जनाब मैं आपको ढूढ़ता हुआ इतनी दूर आया हूँ और मुझे बताया गया है कि अगर मैं *आपकी* क़मीज़ पहनूँगा तो मुझे खुशी मिल जाएगी। क्या आप मुझे अपनी क़मीज़ दे सकते हैं?”

यह सवाल सुनते ही वे और खुशी से, और ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे; ऐसा लग रहा था कि यह खुशी एन्जेलो तक भी पहुँच रही थी।

एन्जेलो को महसूस हुआ कि उसके चहरे पर भी अपने आप मुस्कान छा गई है।

फिर उसे याद आया, *"क़मीज़! अगर मैं ख़ुशी-से भरी वह क़मीज़ नहीं पहनता हूँ तो मुझे स्थायी ख़ुशी नहीं मिलेगा!"*

इसलिए एक बार फिर उसने अपना सवाल पूछा।

"जनाब, मेरी आपसे गुज़ारिश है कि क्या आप मुझे अपनी क़मीज़ दे सकते हैं?"

आख़िरकार साधू ने जो दुशाला ओढ़ी हुई थी, उसकी ओर संकेत करते हुए उत्तर दिया, "पर तुम देख रहे हो! मेरे पास तो क़मीज़ है ही नहीं!"

जब एन्जेलो ने ये चौंका देने वाले शब्द सुने तो इतने सालों तक उसने जो महनत की थी, जो ख़ून-पसीना बहाया था, वह सब उसकी आँखों के सामने घूमने लगा।

"क्या? ऐसा कैसे हो सकता है?" वह हैरान होकर बड़बड़ाने लगा। "तीस साल चले गए— और क़मीज़ है ही नहीं!"

उसने ऊपर की ओर देखा, एक बार फिर उसकी नज़रें उन तेजस्वी पुरुष से टकराईं जो उसके सामने बैठे थे।

तब एन्जेलो को यह एहसास हुआ कि उसके सामने जो सूफ़ी बैठे थे, वे वास्तव में वही फ़कीर थे— जिन्होंने इतने सालों पहले उसे इस सफ़र पर निकलने का सुझाव दिया था!

"अरे जनाब, वे आप थे!" एन्जेलो ने अचम्भित होकर कहा। "इस पूरे रास्ते भर आप मेरे साथ थे। पर मुझे समझ नहीं आ रहा। आपने मुझे इस सफ़र पर क्यों भेजा—एक क़मीज़ की तलाश में जो असल में है ही नहीं?"

यह सवाल सुनते ही फ़कीर फिर से ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे। आख़िर, फ़कीर एक पल के लिए रुके और उन्होंने कहा, "मुझे बताओ, बेटा, क्या तुम ख़ुश नहीं हो?"

एन्जेलो एक पल के लिए चुप रहा। यह सच था—वह हल्का महसूस *कर रहा था।* ऐसा लग रहा था कि वह अपने अतीत के बोझ से छूट गया था।

फ़कीर ने फिर से कहा, "तीस सालों से, तुम्हारे मन में और कुछ नहीं, बस ख़ुशी की कामना थी। तीस सालों तक तुम्हारा मन बस इसी पर टिका रहा। तुम्हारा हर एक क़दम, तुम्हारी हर एक दुआ तुम्हें यहाँ इस पहाड़ की चोटी पर ले आई, और यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते तुम्हारे अन्दर पूरी तरह से

खुलापन आ गया। और इस चोटी पर चढ़ने की तुम्हारी कोशिश ने, तुम्हारे दिल का दरवाज़ा खोल दिया। देखो तुम्हारे दिल में कौन है, मेरे बच्चे, अभी, इसी पल में देखो वहाँ कौन है।"

एन्जेलो ने अपना ध्यान अन्तर की ओर मोड़ा।

उसके अन्दर, उसके कण-कण से छलक रही थी खुशी—निर्बाध्य और विशुद्ध।

उसने अपनी आँखें बन्द कीं और उसी में खो गया।

© २०२० एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

यह कहानी विश्वभर की परम्पराओं में सुनाई गई लोककथाओं से प्रेरित है।